



सूर्या फाउण्डेशन राष्ट्राय स्वाहा

इदं राष्ट्राय इदं न मम

त्रैमासिक पत्रिका

अंक-11

वर्ष-3

जुलाई - सितम्बर 2026

उम्मीद भरी कहानियाँ...



सेवा से स्वावलंबन
शिक्षा से सशक्त समाज
गाँव से विकसित भारत



साक्षात्कार : डॉ. राजेंद्र सिंह पड़ौदा

डॉ. आर. एस. पड़ौदा जी कृषि जगत के प्रतिष्ठित विशेषज्ञ हैं। उन्होंने कृषि अनुसंधान, कृषि नीति, कृषि विस्तार और कृषि शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में लंबे समय तक कार्य किया है। वे भारत सरकार के कृषि विभाग में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक तथा डेयर (DARE-Department of Agriculture Research & Education) में सचिव जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों पर भी रहे हैं। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी उन्होंने कृषि के विषय में भारत का प्रतिनिधित्व किया है। सन 1998 में उन्हें पद्म भूषण से सम्मानित किया गया और सेवानिवृत्ति के बाद भी विभिन्न संस्थानों को मार्गदर्शन दे रहे हैं।

पिछले 50 वर्षों में भारतीय कृषि ने किस प्रकार की बड़ी प्रगति की है?

एक समय भारत खाद्यान्न के लिए दूसरे देशों पर निर्भर था और अनाज का आयात करता था, लेकिन आज भारत खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने के साथ-साथ गेहूं और धान का निर्यात भी कर रहा है। देश की बढ़ती आबादी के लिए भोजन उपलब्ध कराने के साथ भारत वैश्विक कृषि बाजार में भी अपनी भूमिका मजबूत कर रहा है।

हरित क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि क्या रही और उसके साथ कौन-सी चुनौतियां सामने आईं?

हरित क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि भारत खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बना और बाद में निर्यातक देश भी बना। हालांकि, इसके साथ प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ा। अधिक सिंचाई, भूजल का दोहन, असंतुलित उर्वरक उपयोग तथा धान-गेहूं की लगातार खेती से मिट्टी की उर्वरता और जल संसाधनों पर प्रभाव पड़ा। इसलिए अब ऐसी कृषि व्यवस्था की जरूरत है जिसमें उत्पादन बढ़ने के साथ प्राकृतिक संसाधनों की सुरक्षा भी हो।

सदाबहार या सतत क्रांति से क्या समझा जाता है?

सदाबहार या सतत क्रांति का मूल उद्देश्य कृषि उत्पादन को लगातार बढ़ाना है, लेकिन ऐसा करते समय प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान न पहुंचे। उत्पादन में वृद्धि के साथ मिट्टी, पानी और अन्य प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा जरूरी है। ऐसी खेती में

संसाधनों का अधिक कुशल उपयोग, संतुलित उर्वरक प्रयोग, बेहतर सिंचाई व्यवस्था और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाने पर जोर दिया जाता है।

भारत में किसान को कृषि व्यवस्था का केंद्र बनाने के लिए क्या बदलाव आवश्यक हैं?

भारत कृषि प्रधान देश है, लेकिन लंबे समय तक किसान को कृषि व्यवस्था का केंद्र नहीं बनाया जा सका। अब कृषि को किसान-केंद्रित बनाने की आवश्यकता है। किसान की समस्याओं और जरूरतों को समझकर ऐसी नीतियां बनानी होंगी जिनसे उसकी आय बढ़े। उसे नई तकनीक, बेहतर ज्ञान, बाजार से जुड़ाव, लागत कम करने के उपाय और वैल्यू एडिशन के अवसर देने होंगे। किसान को केवल उत्पादक नहीं, बल्कि उद्यमी के रूप में भी विकसित करना होगा।

किसानों की आमदनी बढ़ाने में बाजार और वैल्यू एडिशन की क्या भूमिका है?

किसानों को केवल फसल उगाने वाले उत्पादक के रूप में नहीं, बल्कि उद्यमी के रूप में विकसित करना जरूरी है। इसके लिए उन्हें बाजार से जोड़ना और उनकी उपज में वैल्यू एडिशन करना महत्वपूर्ण है। उदाहरण स्वरूप भारत ग्वार जैसे उत्पादों का बड़े स्तर पर उत्पादन और निर्यात करता है, लेकिन ग्वार का ही कई वैल्यू-एडेड उत्पादों का आयात भी करता है। इसी तरह भारत के फूल विदेश जाते हैं और फिर तैयार होकर वापस आते हैं। इसलिए देश में ही वैल्यू एडिशन बढ़ाकर किसानों और ग्रामीण क्षेत्रों की आय में वृद्धि की जा सकती है।

मिट्टी के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने के लिए किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए केवल उर्वरक की मात्रा बढ़ाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि मिट्टी की वास्तविक आवश्यकता के अनुसार पोषक तत्वों का संतुलित उपयोग जरूरी है। मृदा परीक्षण की सुविधा और उसकी विश्वसनीयता भी महत्वपूर्ण है। कई बार किसान को जिस तत्व की आवश्यकता होती है, वह आसानी से उपलब्ध नहीं होता। इसलिए स्थानीय और क्षेत्रीय जरूरत के अनुसार इनपुट की उपलब्धता सुनिश्चित करनी होगी। मृदा परीक्षण और उचित सलाह को किसानों तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना आवश्यक है।

भारत के सामने खाद्य सुरक्षा से आगे पोषण सुरक्षा की चुनौती क्यों महत्वपूर्ण हो गई है?

भारत ने खाद्यान्न उत्पादन में काफी सफलता प्राप्त कर ली है, लेकिन अब चुनौती केवल लोगों को भोजन उपलब्ध कराने की नहीं, बल्कि पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराने की है। केवल रोटी उपलब्ध होना पर्याप्त नहीं है; बच्चों और परिवारों को विविध एवं पौष्टिक आहार की आवश्यकता है। इसलिए आने वाली कृषि क्रांति का केंद्र पोषण सुरक्षा होना चाहिए। इसके लिए खाद्य पदार्थों में विविधता, प्रोटीन और पोषण पर अधिक ध्यान देना जरूरी है।

दलहन के क्षेत्र में भारत की स्थिति क्या है और आत्मनिर्भरता के लिए क्या करना होगा?

भारत दुनिया में दलहन का सबसे अधिक उत्पादन करने वाले देशों में है, साथ ही सबसे ज्यादा दलहन का उपभोग भी करता है और सबसे ज्यादा आयात भी करता है। यह स्थिति बताती है कि घरेलू उत्पादन और आवश्यकता के बीच अभी भी अंतर है। इस अंतर को कम करने के लिए दलहन की खेती को प्रोत्साहित करना होगा। उचित मूल्य और प्रभावी खरीद व्यवस्था भी जरूरी है, ताकि किसानों को दलहन उगाने में आर्थिक भरोसा मिले और देश की आयात पर निर्भरता कम हो।

तिलहन के क्षेत्र में भारत के सामने कितनी बड़ी चुनौती है?

तिलहन के क्षेत्र में भारत के सामने बड़ी चुनौती है। देश में खाद्य तेल का उत्पादन लगभग 13 से 14 मिलियन टन होता है, जबकि आवश्यकता लगभग 27 से 28 मिलियन टन है। यानी घरेलू उत्पादन आवश्यकता से काफी कम है। इससे आयात पर

निर्भरता बढ़ती है। पहले भी ऑयलसीड मिशन के माध्यम से कुछ वर्षों में आयात को लगभग समाप्त करने में सफलता मिली थी। इसलिए सही नीति, तकनीक और किसानों को प्रोत्साहन देकर फिर से घरेलू उत्पादन बढ़ाने की संभावनाएं हैं।

कृषि में नई तकनीक और नवाचार को तेजी से अपनाना क्यों जरूरी है?

कृषि में नई तकनीक और नवाचार उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ पानी, उर्वरक और अन्य संसाधनों के अधिक प्रभावी उपयोग में मदद कर सकते हैं। तकनीक को उचित परीक्षण और नियामक व्यवस्था के बाद किसानों तक तेजी से पहुंचाना चाहिए। एआई, सेंसर, ड्रोन, माइक्रो इरीगेशन और अन्य आधुनिक तकनीकों से यह पता लगाने में मदद मिल सकती है कि खेत के किस हिस्से को कितना पानी या पोषक तत्व चाहिए। इससे संसाधनों की बचत और खेती की दक्षता बढ़ सकती है।

कृषि शिक्षा में युवाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए क्या कदम आवश्यक हैं?

कृषि शिक्षा को केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं रखना चाहिए। कृषि को स्कूल स्तर पर भी एक विषय के रूप में पढ़ाने की आवश्यकता है, ताकि बच्चों को कृषि और उसके वैज्ञानिक महत्व की जानकारी बचपन से मिले। युवाओं के लिए सर्टिफिकेट और डिप्लोमा आधारित व्यावहारिक प्रशिक्षण भी बढ़ाया जाना चाहिए। पशुपालन, नर्सरी, जैव उर्वरक, कृषि मशीनरी की मरम्मत और अन्य कृषि-आधारित क्षेत्रों में कौशल प्रशिक्षण देकर युवाओं के लिए रोजगार और उद्यमिता के नए अवसर पैदा किए जा सकते हैं।

किसानों और कृषि क्षेत्र में शोध करने वालों के लिए एक संदेश

खेती को केवल परंपरागत व्यवसाय के रूप में न देखें, बल्कि इसे नए ज्ञान, तकनीक और नवाचार के साथ अधिक प्रभावी और लाभकारी बनाएं। किसानों को कृषि विज्ञान केंद्रों, विश्वविद्यालयों और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थानों जैसे वैज्ञानिक संस्थानों से जुड़कर सही जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। वहीं शोधकर्ताओं के शोध केवल शोध-पत्र प्रकाशित करने तक सीमित न रहे, बल्कि उसका वास्तविक लाभ किसान तक पहुंचे। ऐसी इम्पैक्ट-ओरिएंटेड रिसर्च और तेज नवाचार ही कृषि को समृद्ध और विकसित भारत की दिशा में आगे ले जा सकते हैं।

(प्रस्तुत बातचीत TheKishanShow youtube channel द्वारा प्रसारित किये गए episode के लिया गया है।)